# हनुमान बाहुक

भाषा-टीका सहित



मनोज पब्लिकेशन्स

*सद्साहित्य को जन-जन तक पहुंचाएं–यही सर्वश्रेष्ठ पुण्य है*

## धार्मिक श्रद्धालुओं के लिए 'मनोज पब्लिकेशन्स' की विशेष भेंट

### छोटे साइज की ये पुस्तकें

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुंदरकाण्ड | 10-00 | अमृतवाणी | 7-00 | कबीर भजनमाला | 7-00 |
| चालीसा पाठ-संग्रह | 10-00 | रामायण मनका १०८ | 7-00 | मीरा भजनमाला | 7-00 |
| काली सहस्रनाम | 10-00 | गोपाल सहस्रनाम | 7-00 | तुलसीदास भजनमाला | 7-00 |
| श्री दुर्गा पाठ | 10-00 | विष्णु सहस्रनाम | 7-00 | शिरडी सांई चालीसा | 7-00 |
| हनुमान चालीसा | 7-00 | गायत्री सहस्रनाम | 7-00 | श्री गजेन्द्र मोक्ष | 7-00 |
| दुर्गा-चालीसा | 7-00 | शिव सहस्रनाम | 7-00 | श्री गणेश सहस्रनाम | 7-00 |
| शिव चालीसा | 7-00 | लक्ष्मी सहस्रनाम | 7-00 | हनुमान बाहुक | 7-00 |
| आरती संग्रह | 7-00 | सूरदास भजनमाला | 7-00 | श्री गर्भ गीता | 7-00 |

**धार्मिक उत्सवों व धार्मिक स्थलों पर मुफ्त वितरण करनेवाले श्रद्धालु हमसे सीधे संपर्क करें, उन्हें ये पुस्तकें उपरोक्त छपी हुई कीमत पर विशेष रियायत–लागत मूल्य पर दी जाएंगी।**

**मनोज पब्लिकेशन्स** 761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली–110084 फोन : 7258349, 7220116 फेक्स न. 7258546

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीगोस्वामी तुलसीदास कृत

# श्री हनुमान बाहुक

(भाषा-टीका सहित)

प्रकाशक :

मनोज पब्लिकेशन्स

761, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110 084

दूरभाष: 7258349, 7248869, 7258546

मूल्य 10.00 रु.

# दो शब्द

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा यूं तो अनेकों ग्रंथ रचे गए हैं, जिनमें श्रीमद् रामचरित मानस, सुन्दर काण्ड आदि काफी प्रचलित हैं, किन्तु इसी श्रृंखला में 'हनुमान बाहुक' भी एक ऐसा ग्रंथ है जो पाठ की दृष्टि से प्रचलन में तो कम है, किन्तु हनुमान बाहुक के श्रद्धापूर्वक पाठ से हनुमान भक्तों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त व्यक्ति को उस कष्ट से मुक्ति दिलाने में 'हनुमान बाहुक' अचूक अस्त्र है। एक कथा के अनुसार श्री तुलसीदास जी ने बांह की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए इन छन्दों द्वारा श्री हनुमानजी की स्तुति की थी।

मनोज पब्लिकेशन्स ने भी सभी हनुमान भक्तों के शारीरिक लाभ हेतु इस दुर्लभ ग्रंथ 'श्री हनुमान बाहुक' का प्रकाशन किया। आशा है भक्तगण लाभान्वित होंगे।

*—प्रकाशक*

# श्री हनुमान बाहुक
## (मानसिक पूजन विधान)

वैसे तो इसका सकाम पाठ शास्त्र सम्मत हनुमन्त पूजन विधान के अनुसार ही करना चाहिए। पूजा के समय साधक लाल वस्त्र धारण कर हनुमानजी के चित्र या मूर्ति आदि का पूजन करें। पुष्प, अक्षत, सिंदूर आदि चढ़ावें, किन्तु यदि पूजन की ऐसी सुविधा न हो (रोग काल में या यात्रा आदि करते समय) तो निम्नलिखित विधि अनुसार मानसिक पूजन कर देव को प्रसन्न करें—

*ॐ आंजनेयं लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि (गन्ध अर्पित करता हूं।)*

*ॐ मारुतिनन्दनं हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि (पुष्प अर्पित करता हूं।)*

*ॐ वरवानरेन्द्रं यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि (धूप अर्पित करता हूं।)*

*ॐ प्रोज्वालानलदीप्यमाननयनो रं वाय्वात्मकं दीपं दर्शयामि (दीप अर्पित करता हूं।)*

*ॐ पञ्चाननोऽपनयतां वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदियामि (नैवेद्य अर्पित करता हूं।)*

*ॐ मर्कटसार्वभौम सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि (सर्वोपचार पूजन अर्पित करता हूं।)*

सकाम पाठ करने वाले भौम प्रदोष से पाठ आरम्भ करें। विधिपूर्वक 40 बार पाठ और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का पालन फलदायी है।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# हनुमान बाहुक

॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥ श्री हनुमते नमः ॥

**छप्पय**

**सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन-तनु।**
**भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु॥**
**गहन-दहन-निरदहन-लंक निःसंक, बंक-भुव।**
**जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव॥**
**कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेव हित संतत निकट।**
**गुनगनत, नमत, सुमिरत जपत, समन सकल-संकट-बिकट॥**

समुद्र को लांघ कर श्री सीताजी का शोक हरने वाले, प्रातःकाल के सूर्य की-सी आभा देने वाले, विशाल भुजाधारी, काल के लिए भी काल के समान, बिना संकोच के, केवल अपनी भौंह को टेढ़ी कर, नहीं जलाई जा सकने वाली लंका को जलाने वाले, राक्षसों के मान-अभिमान को नाश करने वाले हैं, पवन-पुत्र हनुमानजी। श्री तुलसीदास के अनुसार हनुमानजी की सेवा सहज है और वे सेवक के कल्याण के लिए सदा ही निकट रहते हैं। हनुमानजी गुणगान करने वाले, नमन करने वाले, स्मरण करने वाले, जप करने वाले सेवकों के बड़े-से-बड़े कष्टों को दूर करते हैं।

**स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन।**
**उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन॥**
**पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन।**
**कपिस केस, करकस लंगूर, खल-दल बल भानन।**
**कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट।**
**संताप पाप तेहि पुरुष पहिं सपनेहुं नहिं आवत निकट॥**

श्री हनुमानजी की देह सोने के पहाड़ (सुमेरु पर्वत) जैसी है। करोड़ों तरुण (मध्याह्न के) सूर्य की तरह तेजवान, विशाल वक्षस्थल, सशक्त भुजाधारी, वज्र जैसे कठोर नख वाले और वज्र जैसी देह वाले हैं श्री हनुमानजी। नेत्रों में पीलापन, विकराल भौंहें, जीभ, दांत, मुंह सभी कठोर, भूरे रंग की रोमावली, कठोर पूंछ जो दुष्टों के समूह के बल को भंजित करने वाली है। श्री तुलसीदास कहते हैं कि जिसके मन में हनुमानजी की यह विकराल मूर्ति बसती है, उसके पास सपने में भी दुःख नहीं आता।

## झूलना

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो।
बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो॥
जासु गुनगाथ रघुनाथ कह, जासु बल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो।
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है,
पवनको पूत रजपूत रूरो॥

पंचमुखी शंकर, छः मुख वाले स्वामी कार्तिकेय और युद्ध कला में प्रवीण परशुराम जैसे सुभटों व अन्य देवताओं अथवा राक्षसों के मुकाबले में भी युद्ध रूपी नदी को सहज पार होने वाले योग्य वीर वर हैं हनुमानजी। वेद (शास्त्र) जिनकी वन्दना करते हुए कहते हैं कि वे (हनुमान) अपनी आन निभाने वाले यशस्वी वीर हैं। श्री रघुनाथजी स्वयं उनकी गुणगाथा कहते हैं। जिनके अपार पराक्रम के कारण दुःख रूपी जल से भरा संसार सागर सूख जाता है। तुलसीदास कहते हैं कि उनके स्वामी (श्री हनुमानजी) के अतिरिक्त राक्षसों का नाश करने वाला अन्य कोई राजपूत (शूरवीर क्षत्रिय) नहीं है।

## घनाक्षरी

भानुसों पढ़न हनुमान गये भानु मन,
अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो।
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो॥
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो।
बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो॥

श्री हनुमानजी सूर्य से शिक्षा ग्रहण करने गए। सूर्य ने सोचा हनुमान लड़कपन कर रहे हैं। (सूर्य वस्तुतः सदा गतिमान हैं और शिक्षा के लिए तो शिष्य को गुरु सम्मुख रहना पड़ता है) परन्तु श्री हनुमानजी सूर्य की ओर ही अपना मुख कर सूर्य के ही मार्ग पर पीठ की ओर (उल्टे पैरों) चलते रहे, मानो यह बच्चों का खेल हो। इस प्रकार शिक्षा का क्रम नहीं बदला। यह आश्चर्यजनक खेल देख लोकपाल ब्रह्मा, विष्णु और शिव की आंखें चौंधिया गयीं और उनके चित्त में खलबली मच गई

थी। तुलसीदास जी कहते हैं कि सब यह सोचने लगे कि कहीं वीरता, धैर्य, साहस आदि गुणों ने श्री हनुमान के रूप में शरीर धारण तो नहीं कर लिया है।

**भारत में पारथके रथकेतु कपिराज,**
**गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो।**
**कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,**
**बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो।**
**बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,**
**फलँग फलाँगहूँते घाटि नभतल भो।**
**नाइ-नाइ माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैं,**
**हनुमान देखे जगजीवन को फल भो॥**

महाभारत के युद्ध के समय, अर्जुन के रथ पर बैठे हनुमानजी की गर्जना सुन कौरवों की सेना घबरा गई। भीष्म और द्रोणाचार्य ने कहा कि यह गर्जना पवनपुत्र हनुमान की है, जिनका बल, वीर रस का समुद्र बन गया है। वानरोचित स्वभाव से बच्चों का-सा खेल समझ धरती से सूर्य तक की ऊंचाई को फलांग, आकाश मण्डल को, अपने एक पग से भी छोटा बना दिया। शीश झुकाकर बड़े-बड़े योद्धा इस रूप को देखते हैं और मानते हैं कि उनका जग-जीवन सफल हो गया।

**गोपद पयोधि करि होलिका ज्यों लाई लंक,**
**निपट निसंक परपुर गलबल भो।**
**द्रोन सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,**
**कंदुक ज्यों कपिखेल बेल कैसो फल भो।**
**संकटसमाज, असमंजस भो रामराज,**
**काज जुग-पूगनि को करतल पल भो।**
**साहसी समत्थ तुलसी को नाह जाकी बाँह,**
**लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो॥**

सागर को, गऊ के खुर से बना, गड्ढा समझा और बिना किसी डर के लंका को जला दूसरे के नगर में गड़बड़ी मचा दी। द्रोणागिरि जैसा पहाड़ देखते-देखते उखाड़ लिया। ऐसा लगा मानो बेल का फल हो, जिसे वानर समूह गेंद समझकर खेल रहे हों। राम-राज्य (रामादल) पर आए संकट की घड़ी में, जब सारा समाज असमंजस में डूबा हुआ था, हनुमानजी

ने युगों तक पूरा न हो सकने वाला काम चुटकी बजाते पूरा किया (लक्ष्मण-शक्ति का प्रसंग) तुलसीदास जी कहते हैं, इस प्रकार समस्त लोकपालों के पुन: परिपालन के लिए हनुमानजी की भुजाएं स्थिर स्थान बनाने में सफल हुईं।

**कमठकी पीठि जाके गोड़निकी गाड़ैं मानो,**
**नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो।**
**जातुधान-दावन परावन को दुर्ग भयो,**
**महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो।**
**कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधन को,**
**तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो।**
**भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान**
**सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो॥**

श्री हनुमानजी ने पैर जमाकर कच्छप की पीठ पर गड्ढा बना दिया (असंभव को संभव कर दिया)। यह गड्ढा मानो समुद्र का जल नापने के लिए पात्र हो। यही गड्ढा राक्षसों-दानवों के पराभव के लिए दुर्ग, बड़े-बड़े मच्छों के रहने हित अंधेरा स्थल बन गया। कुभंकर्ण, रावण और मेघनाद रूपी ईंधन को जलाने के लिए श्री हनुमानजी का प्रताप अग्नि बना। श्री भीष्म पितामह कहते हैं, उनकी दृष्टि में हनुमान जैसा बलशाली, तीनों लोकों में और तीनों काल में कोई नहीं हुआ है।

**दूत रामराय को, सपूत पूत पौनको,**
**तू अजंनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो।**
**सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,**
**सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो॥**
**दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,**
**प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो।**
**ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,**
**साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो॥**

हे हनुमान! आप रामचन्द्र के दूत, पवनदेव के सुपुत्र, अंजनी के नन्दन हैं। आपका प्रताप अनन्त सूर्य जैसा तेजस्वी है। यह सीताजी की चिन्ता को मिटाने वाला, सेवकों के दोषों

को तत्काल समाप्त करने वाला, शरणागत का रक्षक और लक्ष्मणजी के लिए, प्राणों से प्रिय है। यही प्रताप असह्य दरिद्रता रूपी रावण को दबाने वाला और तीनों लोकों में तुलसी का आश्रय है। यह ज्ञानवान, गुणवान, बलवान, परहित हेतु सावधान रहते हुए, सबकी सुधि रखने वाले स्वामी के समान हैं। ऐसे हनुमान को अपने हृदय में बसाना ही चाहिए।

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को।
पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको॥
लोक-परलोकतें बिसोक सपने न सोक,
तुलसीके हिये हैं भरोसों एक ओरको।
रामको दुलारो दास बामदेव को निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोर को॥

दानवों के दल का दमन करने वाले श्री हनुमानजी के बल को सारा संसार जानता है। वेद (शास्त्र) बताते हैं कि देवताओं तक को बन्धनमुक्त कराने वाला, पाप रूपी अंधकार और कष्ट रूपी पाले को घटाने वाला, भक्त रूपी कमलों को प्रातःकाल का सूर्य बन खिलाने वाला श्री हनुमान जैसा दूसरा कौन है? गोस्वामी तुलसीदास को उन्हीं का भरोसा है। लोक-परलोक के सुख-दुःख की चिन्ता नहीं। श्रीराम के अत्यन्त प्रिय सेवक शिव को अपने हृदय में बसाने वाले केसरीनन्दन का नाम कलिकाल में कल्पवृक्ष के ही समान है।

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानइत,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीर को।
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको॥
दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको।
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीर को॥

परमवीरता की अन्तिम सीमा, अत्यन्त भीमरूप, महाबलवान, श्री रघुनाथजी द्वारा चुने गए महावीर हैं हनुमानजी। वज्र जैसे

कठोर शरीर वाले हनुमानजी, जिनका जोर पड़ने पर युद्ध-स्थल में कोहराम मच जाता है, करुणामय, धैर्यवान और धर्माचरण करने वाले भी हैं। दुष्टों के लिए भंयकर काल के समान और सज्जनों के पालनहार हैं। स्मरण करते ही तुलसी के समान भक्तों की पीड़ा को मिटाने वाले, सीताजी को सुख देने वाले तथा रामजी के दुलारे हैं। सेवकों की सहायता करने वाले, रघुनाथजी के दुलारे हैं, साहसी पवनपुत्र हनुमान।

**रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर**
**मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो।**
**धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,**
**सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो॥**
**खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,**
**मांगिबो मलीनता को मोदक सुदान भो।**
**आरत की आरति निवारिबेको तिहूं पुर,**
**तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो॥**

श्री हनुमानजी सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, पालनकर्त्ता विष्णु और संहारकर्त्ता शिव के समतुल्य हैं। वे जीवनदान हेतु अमृत हैं। भार ढोने के लिए भूमि, अंधेरे के लिए सूर्य, सुखाने के लिए अग्निताप, पोषण के लिए चन्द्रमा और सूर्य हैं। दुष्टों को दुःख दे दूषित करने वाले, स्वजनों को परितुष्ट करने वाले हैं। दीन मलीन भिखारी को मोदक देने वाले दानी हैं। हठीले हनुमान तीनों लोकों के दुखियों के दुःख हरने वाले हैं।

**सेवक स्योकाई जानि जानकीदास मानै कानि,**
**सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको।**
**देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,**
**बापुरे बराक कहा और राजा राँकको॥**
**जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,**
**ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको।**
**सब दिन रूरौ परै पूरो जहां-तहां ताहि,**
**जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको॥**

जिनकी सेवा का महत्त्व जान जानकीदास श्रीराम ने अनुग्रह स्वीकारा और भगवान शंकर जिन पर सदा कृपालु रहते हैं, देवी

देवता ही नहीं दानव भी दीन बने हाथ जोड़ते हैं, ऐसे हनुमानजी के लिए बेचारा इन्द्र अथवा अन्य राजा क्या महत्त्व रखते हैं। ऐसे हनुमानजी के सेवक का, सोते-जागते, उठते-बैठते, आमोद-प्रमोद करते, कोई कुछ अनर्थ कर सके, ऐसा कोई नहीं है। जिसके हृदय में श्री हनुमानजी का भरोसा है, उसके लिए सब समय, जहाँ-कहीं भी कार्य सिद्धि निश्चित है।

**सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,**
**लोकपाल सकल लखन राम जानकी।**
**लोक परलोक को बिसोक सो तिलोक ताहि,**
**तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी॥**
**केसरीकिसोर बंदीछोर के नेवाजे सब,**
**कीरति बिमल कपि करुनानिधानकी।**
**बालक-ज्यों पालिहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,**
**जाके हिये हुलसति हाँक हनुमान की॥**

जिसके हृदय में श्री हनुमानजी की टेर बसी हो, उस पर सभी सेवकों सहित शंकर एवं पार्वती प्रसन्न रहते हैं। इसी प्रकार सभी लोकपाल और लक्ष्मण सहित सीताराम कृपालु बने रहते हैं। श्री तुलसीदास जी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति को लोक-परलोक कहीं भी शोक व्याप्त नहीं होता। ऐसे सेवक को किसी अन्य वीर की मदद लेने की क्या आवश्यकता होगी क्योंकि उसे तो कृपालु केसरी नन्दन की निर्मल कीर्ति के कारण मुनिगण, सिद्ध पुरुष बालक समझकर पालते रहते हैं।

**करुना निधान, बलबुद्धि के निधान, मोद**
**महिमानिधान, गुन-ज्ञान के निधान हौ॥**
**बामदेव-रूप, भूप राम के सनेही, नाम,**
**लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ॥**
**आपने प्रभाव, सीतानाथ के सुभाव सील,**
**लोक-बेद-बिधि के विदुष हनुमान हौ।**
**मन की, बचन की, करम की, तिहूँ प्रकार,**
**तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ॥**

श्री हनुमानजी आप करुणा के भण्डार, बल-बुद्धि के धाम, आनन्द और आमोद-प्रमोद के भण्डार, गुण एवं बुद्धि के निधि

हैं। आप शिव के अंश, राम के कृपापात्र हैं। आपके नाम जप से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष मिलता है। श्री सीता नाथ के स्वभाव एवं शील के परिणाम-स्वरूप श्री हनुमान आप लौकिक रीति-नीति के साथ वैदिक-विधान के भी विज्ञ है। ऐसे सुविज्ञ हनुमानजी का तुलसीदास मन, वचन और कर्म, तीनों तरह से, सेवक हैं।

**मन को अगम, तन सुगम किये कपीस,**
**काज महाराज के समाज साज साजे हैं।**
**देव-बंदीछोर रनरोर केसरी किसोर,**
**जुग-जुग जग तेरे बिरद बिराजे हैं॥**
**बीर बरजोर, घटि जोर तुलसी की ओर**
**सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं।**
**बिगरी सँवार अंजनीकुमार कीजे मोहिं,**
**जैसे होत आये हनुमान के निवाजे हैं॥**

श्री हनुमानजी आपने महाराज श्रीरामचन्द्र के काम के लिए अपने मन को विशाल और तन को सुलभ किया और उसके लिए सज गए। केसरीनन्दन ने देवताओं को बन्धनमुक्त कराने हेतु रण-गर्जना की। युगों-युगों से यशगान होता आया है उन अत्यन्त शक्तिशाली वीर का। लगता है तुलसी की ओर कम ध्यान है। यह जानकर साधुगण सकुचा गए हैं और दुष्ट गर्जन कर रहे हैं। हे अंजनीकुमार! तुलसी की बिगड़ी बात उसी तरह संवारिये जैसे उनकी संवरती है जिन पर आपकी कृपा होती है।

**जानसिरोमनि हौ हनुमान**
**सदा, जनके मन बास तिहारो।**
**ढारो बिगारो मैं काको कहा,**
**केहि कारन खीझत हौं तो निहारो॥**
**साहेब सेवक नाते ते हातो,**
**कियो सो तहाँ तुलसी को न चारो।**
**दोष सुनाये तें आगेहुँ को,**
**होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो॥**

हे हनुमानजी! आप ज्ञान शिरोमणि हैं आप अपने सेवकों

के हृदयों में सदा वास करते हैं। तुलसीदास कहते हैं— हे प्रभु! मैंने क्या बिगाड़ा है। मैं तो आपका हूं। मुझसे क्या नाराजगी है। हमारे स्वामी-सेवक सम्बन्ध अप्रभावी होने लगें तो इसमें मेरा क्या बस! मेरी प्रार्थना है कि मेरी ग़लती बता दें। मैं मन का हारा, आगे के लिए सावधान हो जाऊं।

**तेरे थपे उथपै न महेस,**
**थपै थिरको कपि जे घर घाले।**
**तेरे निवाजे गरीबनिवाज,**
**बिराजत बैरिनके उर साले॥**
**संकट सोच सबै तुलसी लिये,**
**नाम फटै मकरीके-से जाले।**
**बूढ़ भये, बलि, मेरिहि बार,**
**कि हारि परे बहुतै नत पाले॥**

हे हनुमानजी! जिसे आप बसा दें, उसे शंकर भी नहीं उजाड़ते। हां, जिस घर को आप नष्ट करें, उसे कौन बसा सकता है? हे दीनरक्षक! जिस पर आप प्रसन्न हों, वे शत्रुओं के हृदय में पीड़ा बन विराजते हैं। तुलसीदास कहते हैं—आपका नाम लेने से सभी संकट और सोच मकड़ी के जाले के समान हट जाते हैं। हे बलनिधान हनुमान जी! मेरी ही बार आप बूढ़े हो गये अथवा बहुत-से गरीबों का पालन करते-करते थक गये हैं? मेरा भी संकट दूर करें।

**सिंधु तरे, बड़े बीर दले खल,**
**जारे हैं लंकसे बंक मवा से।**
**तैं रन-केहरि केहरि के बिदले,**
**अरि-कुंजर छैल छवा से॥**
**तोसों समत्थ सुसाहेब सेई सहै,**
**तुलसी दुख दोष दवासे।**
**बानर बाज बढ़े खल-खेचर,**
**लीजत क्यों न लपेटि लवा-से॥**

आपने समुद्र लांघकर बड़े-बड़े दुष्ट राक्षसों का विनाश कर विकट लंका गढ़ जलाया। हे संग्रामरूपी वन के सिंह! राक्षस

शत्रु बने-ठने हाथी के बच्चे के समान थे, जिन्हें आपने सिंह की भांति नष्ट कर डाला। आपके समान समर्थ और अच्छे स्वामी की सेवा करते हुए भी तुलसी, क्या दोष और दुःख की आग सहन करे? हे वानर श्रेष्ठ! आप बाज बन दुष्टों को बटेर पक्षियों के समान मान, लपेट क्यों नहीं लेते?

**अच्छ-बिमर्दन कानन-भानि,**
**दसानन आनन भा न निहारो।**
**बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से,**
**कुंजर केहरि- बारो॥**
**राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ,**
**बिपच्छ, समीर समीरदुलारो।**
**पापतें, सापतें, ताप तिहूँतें सदा**
**तुलसी कहँ सो रखवारो॥**

अक्षय कुमार को मारने वाले हनुमानजी! आपने अशोक वाटिका को उजाड़ा और प्रतापी रावण के तेज की ओर देखा तक नहीं (कुछ परवाह नहीं की)। आप मेघनाद, अकम्पन और कुम्भकर्ण-सरीखे हाथियों के घमंड को चूर्ण करने में युवा सिंह के समान हैं। विपक्षरूप तिनकों के ढेर के लिए भगवान राम का प्रताप अग्नितुल्य है। पवनकुमार आप जलाने हेतु पवन हैं। हनुमानजी ही तुलसीदास को, पाप, शाप और संताप तीनों से, सदा बचाने वाले हैं।

**जानत जहान हनुमान को निवाज्यौ जन,**
**मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये।**
**सेवा-जोग तुलसी कबहुं कहा चूक परी,**
**साहेब सुभाव कपि साहिबी संभारिये॥**
**अपराधी जानि कीजै सासति सहस भांति,**
**मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये।**
**साहसी समीरके दुलारे रघुबीर जू के,**
**बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये॥**

हे हनुमानजी! संसार जानता है कि आप सेवकों की रक्षा करते हैं। आप अपनी प्रतिज्ञा न भूलिये। हे स्वामी! तुलसी आपकी सेवा में है। उससे क्या चूक हुई है? अपनी उदारता

को बनाए रखें। यदि अपराधी समझते हैं तो सहस्रों भांति की सजा दीजिये, किन्तु जो लड्डू देने से मरे उसे विष से न मारिये। साहसी पवन के दुलारे और रघुनाथजी के प्यारे! भुजाओं की पीड़ा को शीघ्र ही दूर कीजिये।

**बालक बिलोकि, बलि बारेतें, आपनो कियो,**
**दीनबंधु दया कीन्हीं निरुपाधि न्यारिये।**
**रावरो भरोसो तुलसी के, रावरोई बल,**
**आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये॥**
**बड़ो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,**
**माथे पगु बलीको, निहारि सौ निवारिये।**
**केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर, बीर,**
**बाँहुपीर राहु मातु ज्यौं पछारि मारिये॥**

हे दीनबन्धु! बलिहारी जाता हूँ, बच्चा समझ कर आपने लड़कपन से ही मुझे अपनाया और बिना किसी व्याधि के रख कर अनोखी दया की। सोचिये तुलसी आपका दास है। इसको आपका भरोसा, आपका ही बल और आपकी ही आशा है। कलियुग अत्यन्त भयानक है। इसने किसको बेचैन नहीं किया? इस बलवान ने मेरे मस्तक पर पैर रख दिया है, उसको हटाइये। हे केसरीकिशोर, शक्तिशाली वीर! आप रण में गर्जना करने वाले हैं। राहु की माता सिंहिका के समान बाहु की पीड़ा को भी पछाड़कर मार डालिये।

**उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,**
**केसरीकुमार बल आपनो संभारिये।**
**राम के गुलामनि को कामतरु रामदूत,**
**मोसे दीन दूबरेको तकिया तिहारिये॥**
**साहेब समर्थ तोसों तुलसी के माथे पर,**
**सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये।**
**पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,**
**मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये॥**

हे हनुमानजी! आप (सुग्रीव-विभीषण जैसे) उजड़े हुए को बसाने वाले और बसे हुए (रावणादि) को उजाड़ने वाले हैं। अपने बल का स्मरण कीजिये। रामचन्द्र के सेवकों के लिए

हे रामदूत! आप कल्पवृक्ष हैं। मुझ सरीखे दीन-दुर्बलों को आपका ही सहारा है। हे वीर! आपके समान समर्थ स्वामी के रहते हुए भी मुझे अकारण बांधकर मारा जाता है। बलि जाता हूँ, मेरी भुजा विशाल पोखरी के समान है और यह पीड़ा उसमें जलचर के सदृश है। इसलिए आप इसे मगरनी समझकर पकड़ें और इसका मुख फाड़ डालिये।

**रामको सनेह, राम साहस लखन सिय,**
**राम की भगति, सोच संकट निवारिये।**
**मुद-मरकट रोग-बारनिधि हेरि हारे,**
**जीव-जामवंत को भरोसो तेरो भारिये॥**
**कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,**
**सुथल सुबेल भालु बैठिके ब्रिचारिये।**
**महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,**
**लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये॥**

आप में रामचन्द्रजी का स्नेह, रामचन्द्रजी की भक्ति, राम-लक्ष्मण और जानकीजी की कृपा से मिला साहस है। मेरे शोक संकट को दूर कीजिये। रोगरूपी अपार समुद्र को देखकर सभी वानर मन में हार गये हैं। जीवन रूपी जाम्बवन्त को आपका ही बड़ा भरोसा है। हे कृपालु! तुलसी के प्रेमरूपी सुन्दर पर्वत से कूदिये, श्रेष्ठ स्थान सुबेल पर्वत पर बैठे हुए जीवरूपी जाम्बवन्त जी सोच रहे हैं। हे महाबली बाँके योद्धा! बाहु पीड़ारूपिणी लङ्किनी को लात की चोट से मार कर खत्म क्यों नहीं कर डालते?

**लोक-परलोकहूँ तिलोक न बिलोकियत,**
**तोसे समरथ चष चारिहूँ निहारिये।**
**कर्म,काल,लोकपाल, अग-अग जीवजाल,**
**नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये॥**
**खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,**
**तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये।**
**बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,**
**उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये॥**

लोक, परलोक और तीनों लोकों में चारों ओर देखता हूं,

पर आपके समान योग्य कोई नहीं दिखाई देता। हे नाथ! कर्म, काल, लोकपाल तथा सम्पूर्ण स्थावर-जङ्गम जीवसमूह आप के ही हाथ में हैं। अपनी महिमा का ध्यान करें। हे देव! तुलसी आपका खास सेवक है, उसके हृदय में आपका निवास है। वह भारी दुखी दिखाई देता है। वात रोग से हुई बाहु की पीड़ा, केवांच की लता के समान है। उसकी जड़ को बटोर, वानरी खेल करते हुए उखाड़ डालिये।

**करम-कराल-कंस भूमिपाल के भरोसे,**
**बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी।**
**बड़ी विकराल बालघातिनी न जात कहि,**
**बाँहुबल बाकल छबीले छोटे छरैगी॥**
**आई है बनाई बेष आप ही बिचारि देख,**
**पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी।**
**पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसी की,**
**बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी॥**

कर्म के भंयकर कंसराज के बल से बकासुर की बहन राक्षसी पूतना किसी से क्यों डरेगी? बालकों को मारने वाली भयावनी है। उसकी करनी कही नहीं जाती। वह अपनी शक्ति से छोटे सुन्दर बच्चों को छलेगी। आप ही विचार कर देखिये, वह सुन्दर रूप बनाकर आयी है। यदि आप सरीखे गुणी के पाले पड़ेगी तो सभी के पाप कट जायेंगे। हे महाबली कपिराज! तुलसी की बाहु की पीड़ा पूतना पिशाचिनी के समान है। आप बालकृष्ण रूप हैं। आप के ही मारने से यह मरेगी।

**भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोष की है,**
**बेदना विषम पाप-ताप छलछाँह की।**
**करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,**
**पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँह की॥**
**पैहहि सजाय नत कहत बजाय तोहि,**
**बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँह की।**
**आन हनुमान की दोहाई बलवान की,**
**सपथ महाबीर की, जो रहे पीर बाँह की॥**

यह कठिन पीड़ा भाग्य की लिखावट है या समय का क्रोध,

शारीरिक त्रिदोष (वात, कफ, पित्त) का फल अथवा मेरे भयंकर पापों का परिणाम है। दुःख है या धोखे की छाया। मारणादि प्रयोग अथवा यन्त्र-मन्त्र रूपी वृक्ष का फल है। मन की मैली पूतना पापिनी! भाग जा, नहीं तो मैं डंका पीटकर कहे देता हूं कि कपिराज का स्वभाव जान। पगली न बन। अगर बाहु की पीड़ा रही तो तुझे महाबीर बलवान् हनुमानजी की आन है। उन्हीं की दुहाई है। सौगन्ध धराता हूं अब पीड़ा मत रह।

**सिंहिका सँहारि बल, सुरसा सुधारि छल,**
**लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है।**
**लंक परजारि मकरी बिदार बारबार,**
**जातुधान धारि धूरियानी करि डारी है॥**
**तोरि जमकातरि मदोदरि कढ़ोरि आनी,**
**रावन की रानी मेघनाद महँतारी है।**
**भीर बाँहपीर की निपट राखी महाबीर,**
**कौन के सकोच तुलसी के सोच भारी है॥**

हे हनुमानजी! आपने सिंहिका का बल से संहार कर, सुरसा की चातुरी को सुधारकर, लंकिनी को घूसा मार गिरा कर, अशोक वाटिका उजाड़ी है। लंकापुरी को जलाया व मकरी को विदीर्ण किया है। बारम्बार राक्षसों की सेना को धूल में मिला दिया है। यमराज के खड्ग अर्थात् आवरण काट कर मेघनाद की माता और रावण की पत्नी मन्दोदरी को राजमहल से खींच बाहर निकाला। हे महाबली! किस संकोच में आपने, उसकी केवल बाहु की पीड़ा को यथावत् रखा है, तुलसी को यही बड़ा सोच है।

**तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,**
**भूतल सरीरसुधि सक्र-रबि-राहु की।**
**तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,**
**तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी॥**
**साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि,**
**हाथ कपिनाथ हीके चोटी चोर साहुकी।**
**आलस अनख परिहास कै सिखावन है,**
**एते दिन रही पीर तुलसी के बाहुकी॥**

हे वीर! आपके बचपन के ही खेल के बारे में जानकर बड़े-

बड़े धीरजवान भी भयभीत हो जाते हैं। इन्द्र, सूर्य तथा राहु को शरीर की सुध भूल जाती है। आपके बाहुबल से रक्षित समस्त लोकपाल शोकरहित बसते हैं। आपका नाम लेने पर किसी का दुःख नहीं रह जाता। साम, दान और भेद वाली नीति के अनुसार तथा वेद अथवा वेद से इतर ग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित नीति बताती है कि चोर-साहु दोनों की चोटी कपिनाथ के ही हाथ में रहती है। तुलसीदास को बाहु की पीड़ा इतने दिन से है। क्या यह आपका आलस्य है अथवा क्रोध या परिहास है अथवा शिक्षा है।

**टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,**
**बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है।**
**कीन्हीं है संभार सार अंजनीकुमार बीर,**
**आपनो बिसारिहैं, न मेरेहू भरोसो है॥**
**इतनो परेखो सब भाँति समरथ आजु,**
**कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है।**
**सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,**
**चीरी को मरन खेल बालकनिको सो है॥**

टुकड़े के लिए दरिद्रतावश घर-घर फिरता था। हे प्रणतपाल! आपने बालक की तरह मेरा पालन-पोषण किया है। हे वीर अंजनीकुमार! आपने मेरी रक्षा की है। अपने जन को आप कभी न भुलायेंगे, इसका मुझे भी भरोसा है। हे कपिराज! मैं सच कहता हूं, तीनों लोकों में आप के समान भला कौन है? किन्तु सेवक दुर्दशा सहे, इसका ही पछतावा है। बच्चों का खेल हो रहा है और चिड़िया मर रही है। आप क्या तमाशा देखते रहेंगे।

**आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,**
**बढ़ी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है।**
**औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,**
**बादि भये देवता मनाये अधिकाति है॥**
**करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,**
**को है जगजाल जो न मानत इताति है।**
**चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,**
**ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है॥**

मेरे ही पाप एवं त्रिपात अथवा शाप से बाहु की पीड़ा बढ़ी है। यह वेदना न तो कही जाती है और न सही जाती है। अनेक औषधि, यन्त्र, मन्त्र, टोटकादि किये, देवताओं को

मनाया, पर सब व्यर्थ हुआ। पीड़ा तो बढ़ती ही जाती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कर्म, काल और संसार का समूह–जाल कौन ऐसा है जो आपकी आज्ञा को न मानता हो। हे रामदूत! तुलसी आपका दास है। आपने इसको अपना सेवक कहा है। हे वीर! आपकी यह उपेक्षा मुझे इस पीड़ा से भी अधिक पीड़ित कर रही है।

**दूत रामराय को, सपूत पूत बायको,**
**समत्थ हाथ पाय को सहाय असहायको।**
**बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,**
**रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको॥**
**एते बड़े साहेब समर्थ को निवाजो आज,**
**सीदत सुसेवक बचन मन कायको।**
**थोरी बाँहपीर की बड़ी गलानि तुसली को,**
**कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको॥**

हे हनुमान! आप रामचन्द्र के दूत, पवन सुपुत्र, हाथ–पाँव के समर्थ और निराश्रितों के आश्रय हैं। आपके सुन्दर यश की कथा विख्यात है। शास्त्र इसका गान करते हैं और रावण जैसा योद्धा आप के घूंसे के आघात को असह्य मानता था। इतने बड़े समर्थ स्वामी का अनुग्रह पाने पर भी आपका श्रेष्ठ सेवक आज तन–मन–वचन से दुःख पा रहा है। इस थोड़ी–सी बाहु–पीड़ा की तुलसी को बड़ी ग्लानि है। कौन–से पाप हैं अथवा आपका क्रोध है। क्या आपका प्रत्यक्ष प्रभाव लुप्त हो गया है?

**देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,**
**छोटे बड़े जीव जेते चेतन अचेत हैं।**
**पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,**
**रामदूत की रजाइ माथे मानि लेत हैं॥**
**घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,**
**हनुमान आन सुनि छाड़त निकेत हैं।**
**क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसी को,**
**सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं॥**

रामदूत पवनकुमार की आज्ञा देवी, देवता, दैत्य, मनुष्य, मुनि, सिद्ध और नाग आदि छोटे–बड़े सभी प्राणी व जड़–चेतन तथा पूतना, पिशाचिनी, राक्षसी–राक्षस जितने कुटिल हैं, वे शिरोधार्य करते हैं। भीषण यन्त्र–मन्त्र, कूटनीति, कपटी

और असाध्य रोगों के भी आक्रमण हनुमानजी की दोहाई सुनकर स्थान छोड़ देते हैं। अत: आप कुकर्मों पर क्रोध कीजिये पर तुलसी को उचित प्रबोधन कीजिये। जो दोष दिखाई देते हैं उनको सुधार दीजिए।

**तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,**
**तेरे घाले जातुधान भये घर-घर के।**
**तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,**
**सकल समाज साज साजे रघुबर के॥**
**तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,**
**सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके।**
**तुलसी के माथेपर हाथ फेरो कीसनाथ,**
**देखिये न दास दुखी तोसे कनिगर के॥**

आपके बल से वानरों को युद्ध में रावण पर विजय मिली और आपके नष्ट करने से ही राक्षस तीन-तेरह हो गये। आपके ही बल से राजा रामचन्द्रजी ने देवताओं के सब काम पूरे किए और रघुनाथजी का सम्पूर्ण समाज सजा। आपके गुणों का गान सुनकर देवता रोमाञ्चित होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की आँखों में खुशी के आंसू भर आते हैं। हे वानरों के स्वामी! तुलसी के माथे पर हाथ फेरिये। अपनी मर्यादा की लाज रखने वाले आप जैसे के दास, कभी दुखी नहीं देखे गये हैं।

**पालो तेरे टूक को परेहू चूक मूकिये न,**
**कूर कौड़ी दूको हौं आपनी ओर हेरिये।**
**भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,**
**पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये॥**
**अंबु तू हौं अंबुचर, अंब तू हौं डिंभ, सो न,**
**बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये।**
**बालक बिकल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,**
**तुलसी की बाँह पर लामीलूम फेरिये।**

आप के टुकड़ों पर पला हूँ, चूक होने पर भी मौन न हो जाइये। माना मैं कुमार्गी दो कौड़ी का हूँ, पर आप तो अपनी ओर देखिये। हे भोले सेवकों के नाथ! आप थोड़ी-सी भूल से रुष्ट हैं। सन्तुष्ट होकर पालन करें, स्थापित करें, अपना सेवक समझें। आप जल हैं तो मैं मछली हूँ, आप माता हैं तो मैं

छोटा बालक हूँ। देरी न कीजिये, मुझको आपका ही सहारा है। बच्चे को व्याकुल जान प्रेम पहचान, रक्षा कीजिए। तुलसी की पीड़ित बाँह पर अपनी लंबी पूंछ फेरिये।

**घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,**
**बासर जलद घन घटा धुकि धाई है।**
**बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,**
**रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है॥**
**करुनानिधान हनुमान महाबलवान,**
**हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उड़ाई है।**
**खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ़ राकसनि,**
**केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है॥**

रोगों, बुरे ग्रह-नक्षत्रों और दुष्ट लोगों ने ऐसे घेर लिया है, जैसे दिन में बादलों का घना समूह आकाश में घुमड़ आया हो। इनने पीड़ारूपी जल बरसा बिना अपराध क्रोध कर यशरूपी जवासे को झुलसा दिया है। हे करुणा-निधान महाबलवान हनुमानजी! आप हँसकर निहारिये तो ललकार कर कष्टदायी विपक्षी की सेना को, अपनी फूँक से उड़ा दीजिये। हे केसरीकिशोर वीर! तुलसी को तो कुरोगरूपी निर्दय राक्षस ने खा ही लिया था, आपने बलपूर्वक मेरी रक्षा की है।

### सवैया

**रामगुलाम तुही हनुमान**
**गोसाँइ सुसाँइ सदा अनुकूलो।**
**पाल्यो हौ बाल ज्यों आखर दू**
**पितु मातु सौं मंगल मोद समूलो॥**
**बाँह की बेदन बाँहपगार**
**पुकरात आरत आनँद भूलो।**
**श्रीरघुबीर निवारिये पीर**
**रहौं दरबार परो लटि लूलो॥**

हे स्वामी हनुमान जी! आप ही श्रेष्ठ स्वामी श्रीरामचन्द्रजी के सेवक हैं। आप सदा श्रद्धालुओं के पक्षधर हैं। आनन्द मङ्गल के मूल दो वर्णों (राम) ने, माता-पिता के समान मेरा पालन किया है। हे भुजाओं का आश्रय देने वाले! बाहु की पीड़ा से

मैं सारा आनन्द भूल दुखी हो पुकार रहा हूँ। हे रघुकुल के वीर! (के प्रिय) पीड़ा को दूर कीजिये, जिससे मैं दुर्बल पंगु रहकर ही आप के दरबार में पड़ा रहूं।

**घनाक्षरी**

**कालकी करालता करम कठिनाई कीधौं,**
**पाप के प्रभाव की सुभाय बाय बावरे।**
**बेदना कुभाँति सो सही न जाति राति दिन,**
**सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे॥**
**लायो तरु तुलसी तिहारो सौ निहारि बारि,**
**सींचिए मलीन भो तयो है तिहू तावरे।**
**भूतनि की आपनी पराये की कृपानिधान,**
**जानियत सबही की रीति राम रावरे॥**

यह काल की भयानकता है या कर्मों की कठिनता या पाप का प्रभाव अथवा स्वाभाविक बात रोग की उन्मत्तता जो हो रात-दिन की यह भयंकर पीड़ा नहीं सही जाती। पीड़ा ने उसी बाँह को पकड़ा है। जिसे पवनकुमार का सहारा रहा है। तुलसी रूपी वृक्ष प्रभु, आपका ही लगाया हुआ है। यह तीनों तापों की ज्वाला से झुलसकर मुरझा गया है। इसकी ओर कृपा दृष्टि करें। दया रूपी जल से सींचिए। हे दयानिधान रामचन्द्रजी! आप सब प्राणियों-अपने और बेगानों की रीति जानते हैं।

**पायँपीर पेटगीर बाहँपीर मुँहपीर,**
**जरजर सकल सरीर पीरमई है।**
**देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,**
**मोहिपर दवरि दमानक सी दई है॥**
**हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,**
**ओट रामनाम की ललाट लिखि लई है।**
**कुभंज के किंकर बिकल बूड़े गोखुरनि,**
**हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है॥**

पाँव, पेट, बाहु और मुख में पीड़ा है। सारा शरीर पीड़ामय होकर जीर्ण-शीर्ण हो गया है। देवता, प्रेत, पितर, कर्म, काल और दुष्ट ग्रह- सब एक साथ ही मुझ पर हमला कर, तोपों की-सी आग बरसा रहे हैं। मैं तो लड़कपन से ही आप के हाथ बिना मोल बिका हुआ हूँ। अपने कपाल में राम नाम का

आधार लिखा लिया हूँ। राजा रामचन्द्र जी! कहीं ऐसा भी हुआ है कि अगस्त्य जैसे समुद्र पीने वाले मुनि का सेवक, गाय के खुर से बने गड्ढे में भरे पानी में ही डूब जाय।

**बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,**
**मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान हैं।**
**राम नाम जपजाग कियो चहों सानुराग,**
**काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं॥**
**सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,**
**जिनके समूह साके जागत जहान हैं।**
**तुलसी सँभारि ताड़का-सँहारि भारी भट,**
**बेधे बरगदसे बनाइ बानवान हैं॥**

बाहु की पीड़ा रूपी नीच सुबाहु और देह की शक्तिहीनता रूपी मारीच राक्षस और ताड़का रूपिणी मुख की पीड़ा एवं अन्यान्य बुरे रोग मानो राक्षस हैं। मैं प्रेम के साथ राम नाम जप यज्ञ करना चाहता हूँ, परन्तु कालदूत के समान ये भूत क्या मेरे बस में हैं? दो अक्षर वाला राम नाम स्मरण करने पर राम-लक्ष्मण सहायता करेंगे, क्योंकि संसार में इनका बड़ा नाम है। तुलसी कहते हैं हे मन! तू ताड़का का वध करने वाले भारी योद्धा का स्मरण कर, वे इन्हें अपने बाण का निशाना बनाकर बड़ के फल के समान छेद देंगे।

**बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,**
**रामनाम लेत माँगि खात टूक-टाक हौं।**
**पर्‌यो लोकरीति में पुनीत प्रीति रामराय,**
**मोहबस बैठो तोरि तरकि तराक हौं॥**
**खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,**
**अंजनीकुमार सोध्यो रामपान पाक हौं।**
**तुलसी गोसाइँ भयो भोंड़े दिन भूलि गयो,**
**ताको फल पावत निदान परिपाक हौं॥**

मैं बाल्यवास्था से ही शुद्ध मन से श्रीरामचन्द्रजी के सम्मुख हुआ। मुँह से राम नाम लेता टुकड़े माँगकर खाता था। (फिर युवावस्था में) लोकरीति में पड़कर अज्ञानवश राजा रामचन्द्रजी के चरणों की पवित्र प्रीति को तोड़ संसार के चक्कर में झटपट कूद बैठा। उस समय मुझ खोटे (कुकर्म) आचरण करने वाले को अंजनीकुमार ने अपनाया और रामचन्द्रजी के पुनीत हाथों

से मेरा सुधार करवाया। तुलसी गोसाईं बना। पिछले बुरे दिन भूला। उसी का फल आज अच्छी तरह भोग रहा है।

**असन-बसन-हीन-बिषम-बिषाद-लीन,**
**देखि दीन दूबरों करै न हाय-हाय को।**
**तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,**
**दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको॥**
**नीच यहि बीच पति पाइ भरुहाइगो,**
**बिहाइ प्रभु-भजन बचन मन कायको।**
**तातें तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,**
**फूटि-फूटि निकसत लोन रामरायको॥**

भोजन-वस्त्र से रहित, भयंकर विषाद में डूबा और दीन-दुर्बल को देख ऐसा कौन है, जो हाय-हाय नहीं करता। ऐसे अनाथ तुलसी को अपने स्वभाव के अनुसार दयासागर स्वामी रघुनाथजी ने सनाथ बना दिया। इस बीच प्रतिष्ठा पाकर यह नीच फूल गया। तन-मन-वचन से रामजी का भजन करना छोड़ दिया। इसी से शरीर में कष्ट आया। भयंकर बाल-तोड़ के बहाने रामचन्द्रजी का नाम फूटकर (उपकार न मानने का दण्ड) निकलता दिखाई दे रहा है।

**जिओं जग जानकी जीवन को कहाइ जन,**
**मरिबेको बारानसी बारि सुरसरि को।**
**तुलसी के दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठाउँ,**
**जाके जिये मुये सोच करिहैं न लरिको।**
**मोको झूठो साँचो लोग राम को कहत सब,**
**मेरे मन मान है न हरको न हरिको॥**
**भारी पीर दुसह सरीरतें बिहाल होत,**
**सोऊ रघुबीर बिनु सकै दूर करिको॥**

जानकी-जीवन रामचन्द्रजी का दास बना ही संसार में जीवित रहूँ और मरने के लिए काशी तथा गंगा का किनारा रहे। ऐसे स्थान में (जीवन-मरण से) तुलसी के दोनों हाथों में लड्डू रहें। ऐसे व्यक्ति के जीने-मरने से उसके बच्चों को भी शोक नहीं होता है। सब लोग, मुझे-झूठा-सच्चा जो हो, राम का ही दास कहते हैं। मैं न शिव का हूं, न विष्णु का, इसका मुझे गर्व है। शरीर की भारी पीड़ा से विकल हो रहा हूं। बिना रघुनाथजी के मेरा कष्ट कौन दूर कर सकता है?

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेस को महेस मानो गुरुकै।
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैं न जाने सुरकै॥
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजे तुलसी को जानि जन फुरकै।
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै॥

हे हनुमानजी! स्वामी सीतानाथ जी आपके नित्य ही सहायक हैं और हित का उपदेश देने के लिए मानो महेश गुरु हैं। मुझे तो तन, मन, वचन से आपके चरणों का ही आसरा है। आपके भरोसे मैंने देवताओं को देवता नहीं माना। प्रेत द्वारा दी गई अथवा किसी दुष्ट के उपद्रव से मिली इस रोग पीड़ा को दूर कीजिए। तुलसी को सत्य ही अपना सेवक जानकार हे कपिनाथ हनुमान, रघुनाथ, भोलानाथ, और भूतनाथ! रोगरूपी इस महासागर को गाय के खुर बने गड्ढे के समान क्यों नहीं कर डालते?

कहों हनुमानसों सुजान रामरायसों,
कृपानिधान संकरसों सावधान सुनिये।
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमई,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये।
माया जीव काल के करम के सुभाय के,
करैया राम बेद कहैं साँची मन गुनिये।
तुम्हतें कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौं हूँ रहों मौन ही बयो सो जानि लुनिये॥

मैं हनुमानजी, सुजान राजा राम और कृपानिधान शंकरजी से निवेदन करता हूँ। वे सावधान होकर सुनें। विधाता ने यह दुनिया सुख-दुःख, राग-रोष, गुण और दोष से भरी बनाई है। वेद बताते हैं कि रामचन्द्रजी माया, जीव, काल, कर्म और स्वभाव के कारण रूप हैं। यह सत्य है। मैं विनती करता हूं, कृपया मुझे यह समझा दीजिए कि आपसे क्या नहीं हो सकता। मैं फिर भी चुप रहूंगा क्योंकि जो बोया है वही तो काटना है।



मुद्रक : आदर्श प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

# 'मनोज पब्लिकेशन्स' द्वारा प्रकाशित अनुपम व अनूठी धार्मिक पुस्तकें

धार्मिक-स्थलों व समारोहों में मुफ्त वितरण करने वाले श्रद्धालु भक्तों के लिए

**ये पुस्तकें नीचे छपे मूल्यों पर विशेष रियायत—लागत मूल्य पर दी जाएंगी**

| | | |
|---|---|---|
| वैभव लक्ष्मी | (दो रंगों में) | 10-00 |
| हनुमान बाहुक | (दो रंगों में) | 10-00 |
| दुर्गा नवरात्र व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| सर्वदेव पूजा पद्धति | (दो रंगों में) | 10-00 |
| सोमवार व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| मंगलवार व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| बृहस्पतिवार व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| शुक्रवार व्रत कथा (संतोषी माता) | (दो रंगों में) | 10-00 |
| शनिवार व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| सत्यनारायण व्रत कथा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| रामायण मनका १०८ | (दो रंगों में) | 10-00 |
| दुर्गा चालीसा | (दो रंगों में) | 10-00 |
| हनुमान चालीसा | (चार रंगों में) | 10-00 |
| शिव चालीसा | (चार रंगों में) | 10-00 |
| आरती संग्रह | (चार रंगों में) | 10-00 |
| श्री हनुमत् पूजन विधान | (दो रंगों में) | 15-00 |
| श्री दुर्गा पूजन विधान | (दो रंगों में) | 15-00 |
| श्री महालक्ष्मी पूजन विधान | (दो रंगों में) | 15-00 |
| श्री शिव पूजन विधान | (दो रंगों में) | 15-00 |
| नवग्रह पूजन विधान | (दो रंगों में) | 15-00 |
| सुन्दरकाण्ड (मूलपाठ एवं पाठ विधि सहित) | (दो रंगों में) | 20-00 |
| चंचल की सुपरहिट भेंटें | (दो रंगों में) | 20-00 |
| माता की भेंटें | (दो रंगों में) | 20-00 |
| सप्तवार व्रत कथा | (दो रंगों में) | 20-00 |
| चालीसा संग्रह | (दो रंगों में) | 20-00 |
| सुन्दरकाण्ड (मूलपाठ एवं भाषा-टीका सहित) | (दो रंगों में) | 30-00 |
| दुर्गा सप्तशती | (8 पेज रंगीन) | 40-00 |
| गणेश उपासना | (16 पेज रंगीन) | 40-00 |
| शिव उपासना | (16 पेज रंगीन) | 40-00 |
| हनुमान उपासना | (16 पेज रंगीन) | 40-00 |
| असली लाहौरी श्रीमद् भगवद गीता (सजिल्द) | 16 रंगीन चित्रों सहित | 100-00 |

**मनोज पब्लिकेशन्स** 761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली—110084 फोन : 7258349, 7220116 फेक्स न. 7258546

# हनुमान बाहुक

A.H.W. Sawan Series

मंदिरों व धार्मिक उत्सवों में पुस्तक भेंट करने वाले
श्रद्धालु सज्जन प्रकाशक से सम्पर्क करें
उन्हें पुस्तकें लागत मूल्य पर दी जाएंगी।

मनोज
पब्लिकेशन्स

